

रविवार 7 अप्रैल, 2019

विषय — कल्पना

स्वर्ण पाठ: इब्रानियों 11: 3

“विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।”

उत्तरदायी अध्ययन: गलातियों 4 : 7-9
I राजा 18: 21
व्यवस्थाविवरण 4 : 35, 36, 39

- 7 इसलिये तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।
8 भला, तब तो तुम परमेश्वर को न जानकर उनके दास थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं।
9 पर अब जो तुम ने परमेश्वर को पहचान लिया वरन परमेश्वर ने तुम को पहचाना, तो उन निर्बल और निकम्मी
आदि-शिक्षा की बातों की ओर क्यों फिरते हो, जिन के तुम दोबारा दास होना चाहते हो?
21 तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो;
35 यह सब तुझे को दिखाया गया, इसलिये कि तू जान रखे कि यहोवा ही परमेश्वर है; उसको छोड़ और कोई है ही
नहीं।
36 आकाश में से उसने तुझे अपनी वाणी सुनाई कि तुझे शिक्षा दे;
39 सो आज जान ले, और अपने मन में सोच भी रख, कि ऊपर आकाश में और नीचे पृथ्वी पर यहोवा ही परमेश्वर
है; और कोई दूसरा नहीं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 30 : 15 (से :), 19 (तुम) (से:), 26 (भगवान), 29

इस बाइबल पाठ को फ्लेनफील्ड किरिचियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एडडी ने किरिचियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 15 प्रभु यहोवा, इस्राएल का पवित्र यों कहता है, लौट आने और शान्त रहने में तुम्हारा उद्धार है; शान्त रहते और
भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता है। परन्तु तुम ने ऐसा नहीं किया,
19 . . . तुम फिर कभी न रोओगे,
26 . . . उस समय यहोवा अपनी प्रजा के लोगों का घाव बान्धेगा और उनकी चोट चंगा करेगा;
29 तब तुम पवित्र पर्व की रात का सा गीत गाओगे, और जैसा लोग यहोवा के पर्वत की ओर उस से मिलने को, जो
इस्राएल की चट्टान है, बांसुली बजाते हुए जाते हैं, वैसे ही तुम्हारे मन में भी आनन्द होगा।

2. नीतिवचन 3: 5, 7 (से :)

- 5 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।
7 अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना;

3. II राजा 6 : 8 (वह)-17

- 8 ...अराम का जाजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था, और सम्मति कर के अपने कर्मचारियों से कहा, कि अमुक
स्थान पर मेरी छावनी होगी।
9 तब परमेश्वर के भक्त ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा, कि चौकसी कर और अमुक स्थान से हो कर
न जाना क्योंकि वहां अरामी चढ़ाई करने वाले हैं।
10 तब इस्राएल के राजा ने उस स्थान को, जिसकी चर्चा कर के परमेश्वर के भक्त ने उसे चिताया था, भेज कर,
अपनी रक्षा की; और उस प्रकार एक दो बार नहीं वरन बहुत बार हुआ।
11 इस कारण अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया; सो उसने अपने कर्मचारियों को बुला कर उन से पूछा, क्या
तुम मुझे न बताओगे कि हम लोगों में से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है? उसके एक कर्मचारी ने कहा, हे
मेरे प्रभु! हे राजा! ऐसा नहीं,
12 एलीशा जो इस्राएल में भविष्यद्वक्ता है, वह इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है, जो तू शयन की
कोठरी में बोलता है।
13 राजा ने कहा, जा कर देखो कि वह कहां है, तब मैं भेज कर उसे पकड़वा मंगाऊंगा। और उसको यह समाचार
मिला कि वह दोतान में है।
14 तब उसने वहां घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा, और उन्होंने रात को आकर नगर को घेर लिया।
15 भोर को परमेश्वर के भक्त का टहलुआ उठा और निकल कर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल
नगर को घेरे हुए पड़ा है। और उसके सेवक ने उस से कहा, हाय! मेरे स्वामी, हम क्या करें?
16 उसने कहा, मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं।
17 तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके। तब यहोवा ने सेवक की
आंखें खोल दीं, और जब वह देख सका, तब क्या देखा, कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और
रथों से भरा हुआ है।

4. इब्रानियों 12 : 1, 12, 13, 22 (तु), 24 (से 1st ,)

- 1 इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर कर के, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें ।
- 12 इसलिये ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो ।
- 13 और अपने पांवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ, कि लंगड़ा भटक न जाए, पर भला चंगा हो जाए ॥
- 22 ... पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास ।
- 24 और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस लोहू के पास आए हो, जो हाबिल के लोहू से उत्तम बातें कहता है ।

5. मत्ती 14: 14, 22 (से 1st.), 23-32

- 14 उस ने निकलकर बड़ी भीड़ देखी; और उन पर तरस खाया; और उस ने उन के बीमारों को चंगा किया ।
- 22 और उस ने तुरन्त अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ाया, कि वे उस से पहिले पार चले जाएं, जब तक कि वह लोगों को विदा करे ।
- 23 वह लोगों को विदा करके, प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चढ़ गया; और सांझ को वहां अकेला था ।
- 24 उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा साम्हने की थी ।
- 25 और वह रात के चौथे पहर झील पर चलते हुए उन के पास आया ।
- 26 चले उस को झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए! और कहने लगे, वह भूत है; और डर के मारे चिल्ला उठे ।
- 27 यीशु ने तुरन्त उन से बातें की, और कहा; ढाढ़स बान्धो; मैं हूं; डरो मत ।
- 28 पतरस ने उस को उत्तर दिया, हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे ।
- 29 उस ने कहा, आ: तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा ।
- 30 पर हवा को देखकर डर गया, और जब डूबने लगा, तो चिल्लाकर कहा; हे प्रभु, मुझे बचा ।
- 31 यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उस से कहा, हे अल्प-विश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया?
- 32 जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई ।

6. मत्ती 15: 21, 22, 24-28

- 21 यीशु वहां से निकलकर, सूर और सैदा के देशों की ओर चला गया ।
- 22 और देखो, उस देश से एक कनानी स्त्री निकली, और चिल्लाकर कहने लगी; हे प्रभु दाऊद के सन्तान, मुझ पर दया कर, मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा है ।
- 24 उस ने उत्तर दिया, कि इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया ।
- 25 पर वह आई, और उसे प्रणाम करके कहने लगी; हे प्रभु, मेरी सहायता कर ।
- 26 उस ने उत्तर दिया, कि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं ।
- 27 उस ने कहा, सत्य है प्रभु; पर कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं, जो उन के स्वामियों की मेज से गिरते हैं ।

- 28 इस पर यीशु ने उस को उत्तर देकर कहा, कि हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है: जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो; और उस की बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई॥

7. रोमियो 8: 31, 35, 37

- 31 सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?
35 कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार?
37 परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।

8. II कुरिन्थियों 10: 3-5

- 3 क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते।
4 (क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।)
5 सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 419: 6 (परमेश्वर)-7

भगवान और उनके विचार अकेले वास्तविक और सामंजस्यपूर्ण हैं।

2. 108: 21 (I)-29

मैंने दिव्य विज्ञान में इन सच्चाइयों को सीखा है: सभी वास्तविक अस्तित्व ईश्वर दिव्य मन, में हैं, और कि जीवन, सत्य और प्रेम सर्व-शक्तिशाली और सर्व-वर्तमान हैं; सत्य के विपरीत, - जिसे त्रुटि कहा जाता है, पाप, बीमारी, बीमारी, मृत्यु, सामग्री में मन की झूठी भौतिक भावना की झूठी गवाही है; यह असत्य भावना विकसित होती है, विश्वास में, नश्वर मन की एक व्यक्तिपरक स्थिति जो यह तथाकथित मन के नाम मायने रखती है, जिससे आत्मा की सच्ची भावना बंद हो जाती है।

3. 472: 27 (वह)-3

... पाप, बीमारी, या मृत्यु का एकमात्र वास्तविकता यह भयानक तथ्य है कि अवास्तविकता मानव को वास्तविक लगती है, विश्वास को गलत करती है, जब तक कि भगवान उनके भेस को बंद नहीं करते। वे सत्य नहीं हैं, क्योंकि वे भगवान के नहीं हैं।

हम किरिश्चियन साइंस में सीखते हैं कि नश्वर मन या शरीर के सभी अंतर्ज्ञान भ्रम हैं, न तो वास्तविकता और न ही पहचान के बावजूद वास्तविक और समान प्रतीत होते हैं।

4. 276: 12-16, 26 (कलह)-28

यह अहसास कि सभी धर्म असत्य हैं, वस्तुओं और विचारों को अपने वास्तविक प्रकाश में मानवीय दृष्टिकोण में लाता है, और उन्हें सुंदर और अमर के रूप में प्रस्तुत करता है। मनुष्य में सद्भाव उतना ही वास्तविक और अमर है जितना संगीत में। त्याग असत्य और नश्वर है।

विरोध नाममात्र की त्रुटि है। सद्भाव सत्य नाम की एक चीज है।

5. 346: 9-13

कुछ भी नहीं की सादगी सादा है; लेकिन हमें यह समझने की आवश्यकता है कि त्रुटि कुछ भी नहीं है, और इसकी कुछ भी नहीं बचा है लेकिन यह सत्य साबित करने के लिए कुछ - हाँ, सब कुछ - साबित करने के लिए प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

6. 134: 21-30

सच्चा लोगो प्रदर्शनकारी किरिश्चियन साइंस है, सद्भाव का प्राकृतिक नियम जो कलह को खत्म करता है, इसलिए नहीं कि यह विज्ञान अलौकिक या अप्राकृतिक है, न ही क्योंकि यह ईश्वरीय नियम का उल्लंघन है, लेकिन क्योंकि यह भगवान का अपरिवर्तनीय नियम है, अच्छा है। यीशु ने कहा: "मुझे पता था कि तू मुझे हमेशा सुनता है," और उस ने मरे हुआओं में से लाजर को जीवित कर दिया, तूफान को रोक दिया, बीमारों को चंगा किया, पानी पर चला गया। भौतिक प्रतिरोध पर आध्यात्मिक शक्ति की श्रेष्ठता में विश्वास करने का दिव्य अधिकार है।

7. 380: 28-4

यह मानने से अधिक निराशाजनक कुछ भी नहीं है कि ईश्वर के विपरीत एक शक्ति है, या अच्छा है, और यह कि ईश्वर इस विरोध शक्ति का उपयोग स्वयं के खिलाफ, जीवन, स्वास्थ्य, सद्भाव के खिलाफ करने की शक्ति के साथ करता है।

मनुष्य को शासित करने वाला पदार्थ या शरीर का प्रत्येक नियम, जीवन, ईश्वर के नियम से खाली और शून्य प्रदान किया जाता है। हमारे ईश्वर प्रदत्त अधिकारों से अनभिज्ञ, हम अन्याय को कम करने के लिए प्रस्तुत हैं, और शिक्षा का पक्षपात इस गुलामी को लागू करता है।

8. 228: 11-19

मनुष्य की दासता वैध नहीं है। जब मनुष्य अपनी स्वतंत्रता की विरासत में प्रवेश करेगा, तो उसका ईश्वर प्रदत्त भौतिक इंद्रियों पर आधिपत्य हो जाएगा। नश्वर किसी दिन सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर अपनी स्वतंत्रता का दावा करेंगे। तब वे दिव्य विज्ञान की समझ के माध्यम से अपने स्वयं के शरीर को नियंत्रित करेंगे। अपनी वर्तमान मान्यताओं को गिराते हुए, वे सद्भाव को आध्यात्मिक वास्तविकता के रूप में और भौतिक असत्य के रूप में कलह को पहचानेंगे।

9. 88: 9-15 (से.)

मायावी विचारों को भ्रम से अलग कैसे किया जाता है? प्रत्येक की उत्पत्ति को जानकर। विचार दिव्य मन से निकले हुए हैं। विचार, मस्तिष्क से या पदार्थ से आगे बढ़ते हुए, नश्वर मन की शाखा हैं; वे नश्वर भौतिक विश्वास हैं। विचार आध्यात्मिक, सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत हैं। विश्वास तथाकथित भौतिक इंद्रियों से आगे बढ़ते हैं।

10. 563: 1-7 (से?)

मानव भावना अच्छी तरह से कलह में अचंभित कर सकती है, जबकि, एक दिव्य भावना के लिए, सद्भाव वास्तविक है और असत्य को दूर करता है। हम अच्छी तरह से पाप, बीमारी और मृत्यु पर चकित हो सकते हैं। हम अच्छी तरह से मानव भय पर हैरान हो सकते हैं; और फिर भी घृणा से अधिक चकित, जो अपने हाइड्रा सिर को उठाता है, बुराई के कई आविष्कारों में अपने सींग दिखाता है। लेकिन हमें कुछ भी नहीं करने के लिए क्यों खड़ा होना चाहिए?

11. 96: 15-18

भौतिक विश्वासों का टूटना अकाल और महामारी, चाहत और शोक, पाप, बीमारी और मृत्यु के रूप में प्रतीत हो सकता है, जो कि कुछ भी नहीं होने तक नए चरणों को मानते हैं।

12. 414: 28-31

याद रखें कि मनुष्य की पूर्णता वास्तविक और अकल्पनीय है, जबकि अपूर्णता दोषपूर्ण, असत्य है, और दिव्य प्रेम के बारे में नहीं है।

13. 495: 14-20

जब बीमारी या पाप का भ्रम आपको घेरता है, तो आपको भगवान और उनके विचार पर दृढ़ता से टिकना चाहिए अपने विचार में पालन करने के लिए उसकी समानता के अलावा कुछ भी अनुमति न दें न तो डर और न ही संदेह को अपनी स्पष्ट भावना और शांत विश्वास का पालन करें, कि जीवन के सामंजस्यपूर्ण जीवन की मान्यता - जैसा कि जीवन है - किसी भी दर्दनाक भावना को नष्ट कर सकता है या उस पर विश्वास कर सकता है, जो जीवन नहीं है।

14. 378: 26-30 (से ;)

भगवान ने जीवन को अक्षम करने या कलह की लंबी और टंडी रात के साथ सामंजस्य स्थापित करने की शक्ति के साथ कभी बात नहीं की। ऐसी शक्ति, बिना दिव्य अनुमति के, अकारण है;

15. 368: 14-19

जब हम त्रुटि में होने की तुलना में अधिक विश्वास करते हैं, तो हम आत्मा में अधिक विश्वास रखते हैं, बात करने की तुलना में अधिक विश्वास करते हैं, मरने की तुलना में जीने में अधिक विश्वास करते हैं, मनुष्य की तुलना में भगवान में अधिक विश्वास करते हैं, तब कोई भी भौतिक दमन हमें बीमार होने और त्रुटि को नष्ट करने से नहीं रोक सकता

16. 253: 9-17

मुझे आशा है, प्रिय पाठक, मैं आपके दिव्य अधिकारों, आपके स्वर्ग-सद्भाव सद्भाव की समझ में अग्रणी हूँ, — जैसा कि आप पढ़ते हैं, आप देखते हैं कि कोई कारण नहीं है (गलती से, भौतिक अर्थ जो शक्ति नहीं है) आपको बीमार या पापी बनाने में सक्षम है; और मुझे आशा है कि आप इस झूठे अर्थ पर विजय प्राप्त कर रहे हैं। तथाकथित भौतिक अर्थों के मिथ्यात्व को जानने के बाद, आप पाप, बीमारी या मृत्यु में विश्वास को दूर करने के लिए अपने विशेषाधिकार का दावा कर सकते हैं।

17. 355: 11-13

हर नाम और प्रकृति की कलह को और अधिक न सुना जाए, और जीवन के सामंजस्यपूर्ण और सच्चे अर्थों को और मानव चेतना को अपने कब्जे में लेने दें।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक किरिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6